सप्तम् परिच्छेद

प्रतीक नाटक: राजनैतिक अभिव्यक्ति:-

1. पारिवारिक चेतना से प्रभावित राजनैतिक स्थिति
2. सामाजिक चेतना से प्रभावित राजनैतिक स्थिति
3. समकालीन राजनीति का प्रतीक नाटकों पर प्रभाव
4. चुनाव प्रणाली एवं दलगत नीति का प्रतीक नाटकों पर प्रभाव
5. आर्थिक विषमता
6. औद्योगीकरण तथा वर्गचेतना
7. निर्धनता महँगाई, व बेरोजगारी

प्रतीक नाटक: राजनैतिक अभिव्यक्ति :-

प्राचीन काल से ही मनुष्य जीवन किसी न किसी रूप से राजनीति से प्रभावित होता आया है। शासनपद्धति, अन्तर्राज्जीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध राष्ट्र की सीमा सुरक्षा तथा नागरिकों के अधिकार तथा उनकी सुरक्षा राजनैतिक स्थितियों के अन्तर्गत आती है। सन् 1857के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में भारतीयों के पराजित होने पर अंग्रेज शासकों द्वारा उन्हें बड़ी यातनायें दी गयी, उनके अत्याचारों से सम्पूर्ण देश कराह उठा। जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप भारतेन्दु ने साहित्य के माध्यम से स्वामी दयानन्द सरस्वती ने धर्म के माध्यम से तिलक, गोखले, लाला-लाजपत राय आदि ने विभिन्न राजनीतिक संगठनों के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण की नींव डाली।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात धर्म निरपेक्ष गणराज्य भारत के सामने अनेकानेक नई नई समस्याओं का जन्म हुआ। सम्पूर्ण देश अकाल, महामारी, के प्रकोपों से व्याकुल था। राजनैतिक अशान्ति, भारत-पाकिस्तान युद्ध के कारण उत्पन्न अनैतिकता तथा अवसाद के बादल देश पर उमड़ने लगे, जिससे भारतीय साहित्य का क्षेत्र भी अछूता न रहा। मंहगाई बेरोजगारी चोरबाजारी, मुनाफाखोरी, स्वार्थी दल-बदल नेताओं की बढ़ोत्तरी छल-कपट, आडम्बर, आदि ने गांधी जी की सत्य अहिंसा, की राजनैतिक प्रणाली को बुरी तरह दूषित कर दिया।

"किसी भी देश की राजनीति तत्कालीन परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती।" 18वीं शताब्दी में अमरीकी द्वीप के देश जनतांत्रिक और राष्ट्रीय सरकारें स्थापित कर रहे थे। औद्योगिक तथा वैज्ञानिक विकास के फलस्वरूप नई राजनीतिक चेतना उद्भूत हो रही थी फ्रान्सिसियों ने विश्व को आधुनिक जनतन्त्र प्रदान किया। जिससे व्यक्ति को राजनैतिक अधिकार

मिले, जिसमें भाषण, लेखन, धार्मिक स्वतन्त्रता, कानून, न्याय रक्षा आदि सम्वैधानिक अधिकार अस्तित्व में आये। रूसी क्रान्ति ने तो विश्व भर को आलोड़ित किया। इस क्रान्ति ने विश्व के समस्त मजदूर वर्ग को एकता के सूत्र में पिरोकर स्वअधिकारों के प्रति सचेत किया, उन्होंने अनुभव किया कि जब तक हमें राजनैतिक स्वत्व न मिलेंगें तब तक हमारे दुःख दूर न होगें। (1) इस प्रकार के क्रान्तिकारी विचार न केवल रूस में वल्कि फ्रान्स, जर्मन, इंग्लैण्ड, आदि अन्य युरोपिय देशों में विकसित होने लगे। (2) अंग्रेजी सभ्यता और पाश्चात्य विचारों के प्रभुत्व के कारण हमारा देश भी इससे अछूता न रहा। इस प्रकार विश्वभर को झकझोर रही राजनैतिक व राष्ट्रीय चेतना भारत की परिस्थितियों से प्रभावित हो उसकी राजनैतिक स्थिति को एक नये मोड़ पर ले आयी। जैसा कि स्पष्ट है, गांधी, तिलक, गोखले, नेहरू, टण्डन आदि नेताओं के लिए राजनीति देश कल्याण तथा मानव सेवा की पर्याय बन गयी। इन नेताओं ने अपना सब कुछ अर्पण कर देश में आदर्श राजनीति को निर्मल स्रोतों में प्रवाहित किया, भारत वासियों की सुप्त चेतना को झकझोरा और पराधीन देश को मुक्त कराने के लिए भारतीय जनता का आह्वान किया।

गांधी युग तक राजनीति में व्यापक परिवर्तन आ गया था। जनता के सहयोग के परिणामस्वरूप नई सम्भावनायें आशायें जागृत हो रही थी, 1905 में बंग भंग असहयोग नामक आन्दोलन आदि इसी राजनीतिक चेतना के परिणाम थे। सन् 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारम्भ हो जाने पर भारत देश के जनजीवन में अभूतपूर्व जागृति आयी। प्रेस, डाक, रेल, आदि की सुविधाओं से साहित्य और समाज में नवीन चिन्तन और दृष्टिकोण पनपने लगे। सन् 1925 में पं. जवाहर लाल नेहरू।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है, कि स्वतन्त्रता से पूर्व की राजनीति

सदभाव, भाईचारे, त्याग, एकता, देशप्रेम तथा मानवीय मूल्यों की नींव पर आधारित थी । किन्तु ज्यों ज्यों परिस्थितिवश देश में आर्थिक संकट शरणार्थी समस्या, सत्ता लोलुपता आदि प्रवृत्तियाँ बढ़ती गयी। जमींदारी उन्मूलन से विलास और आलस्य में वृद्धि उच्च वर्ग की अपेक्षा मध्यम तथा निम्न वर्गों में होने लगी ३. स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात उदभूत सभी-समस्यायें हिंसात्मक आन्दोलन आदि घटनायें नाटकों का कथानक बनने लगी । सामाजिक, राजनैतिक, विसंगतियों तथा रोमहर्षक घटनाओं को आधार मानकर रचनायें की जाने लगी । जिनमें शरणार्थी समस्या 4. देशव्यापी राजनैतिक भ्रष्टाचार 5. विदेशी आक्रमण, 6. तथा राजनीति से प्रभावित मूल्य संक्रमण 7. आदि को कथानक का लक्ष्य बनाया गया ।

परिवार, समाज, प्रेम, विवाह, रहन-सहन, खान-पान, जाति धर्म, राजनीति और संस्कृति के नूतन प्रसंगों को लेकर नाट्यलेखकों ने प्रेरणास्पद रचनाओं का सृजन किया । इनमें विनोद रस्तोगीकृत नये हाथ, हरिकृष्ण प्रेमी का नयी राह, नरेश मेहता का अपराधी कौन? रेवती शरण शर्मा कृत अन्धेर का बेटा, ज्ञानदेव अग्निहोत्री का माटी जाग रे, शंकर शेष का बिन बाती का दीप आदि प्रमुख नाटक है सम सामयिक युग में लिखे गये प्रतीक नाटकों में राजनैतिक लक्ष्यहीनता से उत्पन्न गणतन्त्रीय अनास्था का जीता जागता चित्रण है । समकालीन नाटकों में अब्दुल्ला दीवाना, चतुर्भुज राक्षस, चाय पार्टियाँ, शुतुर्मुर्ग, सिंहासन खाली है, अंधेर का हाथी, काला राजा, बकरी, दरिन्दे, उत्तर उर्वशी, खेलापोलमपुर, बुल-बुल सराय, काला पहाड़, चिराग की लौ, ओमक्रान्ति, दिल्ली ऊँचा सुनती है, कुत्ते, तू-तू, आदि ऐसे नाटक है, जिनमें सामाजिक और राजनैतिक विषमताओं को अभिव्यक्ति मिली है । अब्दुल्ला दीवाना नाटक की कथावस्तु में अब्दुल्ला के कत्ल के मुकदमें को केन्द्रबिन्दु बनाकर नाटककार ने युगीन भ्रष्ट राजनीति झूठी-

धार्मिकता पंगु न्याय व्यवस्था एवं अवसरवादी वृत्ति को अभिव्यक्ति दी है। अब्दुल्ला नायक हमारे परिवेश गत अराजकता का प्रतीक है। चतुर्भुज राक्षस की रचना जय प्रकाश नारायण के सम्पूर्णक्रान्ति आन्दोलन के प्रचार को अभिव्यक्ति करती है। चतुर्भुज राक्षस शोषण, अन्याय और विषमता, का प्रतीक है। अतः नाटककार ने इससे मुक्ति के लिए सामूहिक क्रान्ति को आवश्यकबताया है। चाय पार्टियाँ नाटक सामाजिक एवं राजनैतिक जिन्दगी की हंसी उड़ाता है। शुतुर्मुर्ग नाटक में राजनैतिक नेतृत्व को शुतुर्मुर्ग के प्रतीक से व्यक्त करते हुए श्री अग्निहोत्री ने जनतन्त्र की भ्रष्टता तथा शासन की दुर्व्यवस्था का बड़ा ही सुन्दर चित्र खींचा है। इस नाटक में विरोधीलाल का चरित्र अवसरवादी और सुविधा जीवी केरूप में विपक्ष की भूमिका अदा करता है। मामूली राम जनसाधारण का प्रतिनिधित्व करता है। सिंहासन खाली है, नाटक में सारे राजनैतिक हथकण्डों को सिंहासन पाने के लिए इस्तेमाल किया गया है नागपाश नाटक में नागपाश संकटकाल का प्रतीक है जो सत्ता को पुरानी रूढ़ियों के नागपाश से मुक्त कराने का आह्वान करता है ऐसभी नाटक यथार्थ का उदघाटन करतेहुए व्यंग्य केस्तर पर राजनैतिक विसंगतियों को अभिव्यक्ति देने में सफल हुए हैं। अन्धों का हाथी, जहाँ पर जनता के प्रति व्यवस्था, की उदासीनता का प्रमाण है, वहीं पर अन्धेर नगरी की तर्ज पर लिखा गया नाटक " एक गधा था, उर्फ अलादाद खां अपनी सनको अपने स्वार्थों के लिए जनता के इस्तेमाल की विडम्बना कोअभिव्यक्ति देता है। इस नाटक में शरद जोशी ने उन बुद्धि जीवियों कोबुरी तरह छीला है जो सत्ता की तेवरों के अनुसार गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं। काला राजा सम सामयिक शासन व्यवस्था में निरंकुश शासन का प्रतीक है। जो जनता पर बल पूर्वक आतंक जमाना चाहता है। सर्वेश्वर का "बकरी" नाटक समकालीन शासन व्यवस्थामें आज के छदम् वेशीनेताओं के राजनैतिक षडयन्त्रों

कोअभिव्यक्ति देता है । जो गांधीवादी आदर्शों के मुख टोटों में धर्मान्ध एवं रूढ़िग्रस्त जनता को ठगते हैं । वास्तव में इस शोषण के प्रति विद्रोह जगाना ही नाटक कीमूल चेतना है । हमीदुल्ला का दरिन्दे नाटक में राजनैतिक मूल्यों के विघटना का सवाल उठाया गया है, इसमें व्यंग्य प्रतीक से जुड़कर धारदार अभिव्यक्ति देता है । इस नाटक में शेर, भालू, लोमड़ी आदि जानवर पात्रबनकर आये हैं । सामान्यत: ये जानवर पिछड़े वर्ग के प्रतीक हैं । लोमड़ी चालाक सत्ता का प्रतीक है । और भालू सरल आदमी की अभिव्यक्ति देता है । मणि मधुकर का नाम खेलापोलमपुर भ्रष्ट राजनैतिक व्यवस्था का पर्दाफाश किया गया है । ओम क्रान्ति क्रान्ति नाटक में कुसुम कुमार ने नयी पीढ़ी के पाश्चात्य अन्धानुकरण की प्रवृत्ति पर आधुनिक प्रशासन की नग्नता पर चोट पहुँचायी गयी है । "दिल्ली ऊँचा सुनती है नाटक में समकालीन राजनैतिक विसंगतियों का दिलचस्प व्यौरा प्रस्तुत किया गया है । मणिमधुकर का रस गन्धर्व जहाँ राजनैतिक रासलीला की विद्रूपता को अभिव्यक्ति देता है, वहीं पर सुरेश चन्द्र शुक्ल का भस्मासुर अभी जिन्दा है, सत्ता-लोलुप सिंहासन धर्मियों की अमानवीय भावनाओं को अभिव्यक्ति देता है । भ्रष्ट राजनीति का जो व्यौरा इन प्रतीक नाटकों में मिलता है, वह - पारिवारिक तथा सामाजिक स्तर पर चुनाव प्रणाली आर्थिक विषमता औद्योगीकरण, निर्धनता, मँहगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी जैसी समस्याओं से पर्याप्त प्रभावित है।

1. पारिवारिक चेतना से प्रभावित राजनैतिक स्थिति:-

पारिवारिक चेतना का मूलाधार दाम्पत्य जीवन, वात्सल्य प्रेम, पति-पत्नी, माता-पिता, तथा भाई बहन के मधुर सम्बन्धों का सहज निर्वाह है परन्तु समकालीन राजनीति से प्रभावित होने के कारण हमारी पारिवारिक चेतना टूट रही है ।

मर्यादाओं और आदर्शों का सर्वथा ह्रास हो रहा है। आज पति-पत्नी माता, पिता, तथा भाई-बहन तथा भाई भाई के सम्बन्धों में अन्तर कलह शुरू हो गयी है। आधुनिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण पारिवारिक जीवन मूल्यों के प्रति अस्वीकृति एवं उदासीनता के स्वर मुखरित हो रहे हैं। आज स्त्री-पुरुषों के आदर्शवादी सम्बन्धों पर प्रश्नचिन्ह लग गया है। संविधान ने पति-पत्नी को ही परिवार के रूप में मान्यता दी है। आज 18 वर्ष के पहले वैवाहिक सम्बन्धों में जुड़ना एक कानूनी अपराध है, हिन्दू समाज में रहन सहन खान पान विवाह कर्म आदि पर समकालीन राजनीति का पर्याप्त असर पड़ा है। रमेश बक्षी कृत नाटक देवयानी कई पुरुषों के साथ स्वच्छंद जीवन गुजारती हुई विवाह को विवशता मानती है। उसका कहना है कि " अब " शादी केवल एक पास है, जिसको हाथ में रखने और खुलेआम घूमने, एक विस्तर मैं सोने और दुर्घटना के समय सामाजिक विरोध न होने का सर्टीफिकेट मिल जाता है 8. इस प्रकार आधुनिक काल के पारिवारिक नाटकों में आधे-अधूरे का महत्वपूर्ण स्थान है। पति-पत्नी के सम्बन्धों की कड़वाहट, मध्यमवर्गीय परिवेश की भयावह स्थिति इस नाटकमें अभिव्यक्त हुई है। सावित्री इस नाटक की नायिका एक कामकाजी महिला है। घर का सारा काम करती है। पति महेन्द्रनाथ व्यापार में सब कुछ गंवा चुका है। इसलिए पत्नी की दृष्टि से वह अधूरा है। पति महेन्द्रनाथ अपने परम्परागत निरंकुश अधिकार पर चोट खाकर इसका बदला पाशविक तरीके सेलेता है। वह सावित्री को बुरी

तरह मारता है। कपड़े फाड़ देता है, और गुसलखाने में ले जाकर सम्भोग करता है। वह सावित्री के पुरुष मित्रों के आने पर खिसक जाता है। निश्चय ही इस माहौल में पलने वालेबच्चे सहज नहीं हो सकते। बड़ी लड़की को लगता है कि किसी चिड़िया घर में रह रही हो छोटी लड़की 13-14 साल की उम्र में ही विद्रोह करने लगती है। लड़काअशोक आक्रोश और तनाव के

भों में जी रहा है । इस प्रकार इस नाटक की सभी पात्र अधे-अधूरे है, मन्नू भण्डारी का नाटक "बिना दीवारों के घर में" दाम्पत्य जीवन के तनाव को अभिव्यक्त किया है, कुसुमकुमार का नाटक सुनो शेफाली की हरिजन युवती एक उच्च वर्ग की ब्राह्मण युवक के साथ विवाह करने से इसलिए मना कर देती है, क्योंकि युवक का पिता निम्न वर्ग की कन्या से अपने लड़के का विवाह कर चुनाव जीतना चाहता है, सूर्यमुख नाटक की नायिका वेनुरति के लिए कुल, जाति, मर्यादा का कोई महत्व नहीं है । कृष्ण का पुत्र, प्रद्युम्न अपनी विमाता वेनुरति से विवाह कर नये मन्वन्तर, नये धर्म को कायम करना चाहता है ।

एकऔर अजनबी में मृदुला गर्ग ने पारिवारिक और राजनीतिक सेप्रभावित दाम्पत्य सम्बन्धों की यान्त्रिकता के प्रश्न को उठाया है । इसी प्रकार राजनीति से प्रभावित वामाचार में बदलते हुए मूल्यों के कारण पारिवारिक रिश्तों को नये ढंग से देखने का प्रयास किया गया है । घरौंदा नाटक में शंकर शेष ने महानगरीय आवास व्यवस्था से उत्पन्न संकट को अभिव्यक्त किया है । इसी प्रकार शंकर शेष का नाटक एक और द्रोणाचार्य समानान्तर - स्थितियों का सुसंबद्ध नाटक है । एक ओर अरविन्द उसके परिवार और कालेज के प्रसंग हैं । और दूसरी ओर द्रोणाचार्य, उनके परिवार और उनसे सम्बद्ध महाभारत कालीन प्रसंग है । डा० लक्ष्मीनारायण लाल का नाटक यक्ष प्रश्न प्रतीक नाटकों की दिशा में एक अभिनव प्रयोग है । इस नाटक में पाँचों पाण्डव, द्रौपदी, को अकेले अपने लिए ही प्राप्त करना चाहते हैं । उनका द्रौपदी के लिए सोचना समझना और प्रयत्न करना ईर्ष्या, द्वेष शक्ति परीक्षण और कूटनीति के स्तर से आज के मनुष्य की तरह होता है । किन्तु द्रौपदी इन्हें एक सूत्र में जोड़ती है, और दुःशासनादि कौरव अत्याचारियों के विरुद्ध खड़ा करती है । ये पाँचों शक्तियाँ बिखरी होने के कारण द्रौपदी के विवस्त्र

होने की स्थिति में एक दूसरेकामुंह देखती रह जाती है। "कुत्ते" नाटक में कार्यालय में काम करने वाले अधिकारी और क्लर्क मि. कपूर बोरकर नाटक के महत्त्वपूर्ण चरित्र है। मि. आभा के प्रति दोनों की बुरी काम पिपासा है। दोनों की गन्दी चाहत बेचारी आभा को परेशानी में डाल देती है। यहाँ तक कि दोनों सज्जन बारी-बारी से उसके घर आते हैं। ये दोनों पात्र अधिकारियों और कर्मचारियों के ऐसे वर्ग चरित्र को उभारते है जो ढलती उम्र में भी अपनी शारीरिक लालसा और कामुक प्रवृत्ति के शिकार है जिन्होंने वर्तमान कार्यालयों को गन्दा बना रखा है। मि. आभा के शब्दों में इनका चरित्र कुत्तों से साम्य रखता है, " इन कुत्तों को यदि बहुत पुचकारोगी तो मुह चाटेंगे, और यदि ज्यादा दुतकारोगी तो नुकसान पहुँचायेंगे। और इन्हें बस तू और धत से बहलाये रहें। भूखे कुत्ते हैं, इन्हें रोटी से ज्यादा मांस प्रिय है, मांस का टुकड़ा दूर से दिखायें बस पूँछ हिलाते रहेंगे। 9. गिरिराज किशोर कृत नाटक प्रजा ही रहने दो, महाभारत कालीन पारिवारिक चरित्रों की मूल प्रवृत्तियों को अभिव्यक्तकरता है। नाटक में अन्धे धृतराष्ट कुटिल लालसाओं के प्रतीक हैं। नाटक मूल स्वर आधुनिक राजनीतिक सन्दर्भ में अभिव्यक्त हुआ है। धृतराष्ट ने ही कूटनीतिक तौर पर जुआ खेलने के लिए आदेश दिया था। नाटकमें अपने ही द्वारा लगायी गयी आग में घिरते हुए अपना ही विनाश देखते हुए धृतराष्ट एक दयनीय चरित्र बन जातेहैं। डा० सुरेश चन्द्र शुक्ल का नाटक भस्मासुर अभी जिन्दा है, में भस्मासुर आज के नेताओं और व्यवस्था की आसुरी वृत्तियों का सटीक प्रतीक है। वह आज के व्यक्तियों में सबसे अधिक सुविधा भोगी अवसरवादी, प्रबुद्ध व्यक्ति हैं। पैसे के बल पर विरोधियों का मुह बन्द करके विधायक बन जाता है। और फिर ठेका, भ्रष्टाचार, बेईमानी, से उनका रोजगार बड़े जोर शोर से चलने लगताहै। भस्मासुर के सटीकप्रतीक

से आज के नेताओं और व्यवस्था की आसुरी वृत्तियों को सहजता से स्थापित करनेमें नाटक कार को अतीव सफलता मिली है । ज्ञानदेव अग्निहोत्री के शुतुर्मुर्ग नाटक में रानी और दासी दो नारी पात्र हैं । रानी का चरित्र संक्षिप्त होते हुए भी महत्वपूर्ण है । नाटककार ने उसके चरित्र के माध्यम से विशिष्ट प्रयोग प्रस्तुत किया है । रानी का कोई निजी व्यक्तित्व नही है । बाद में वह मन्त्रियों में एक इकाई बनकर सम्मिलित हो जाती है, इस नाटक का प्रत्येक पात्र शुतुरमुर्गी आचरण करता है। इस आचरण में राजा उसे कलामंत्री का पद देता है । इस नाटक में रानी नाजियों या सामंतों के वर्ग की प्रतिनिधि है, जिनके लिए भुखमरी और गरीबी मनोरंजन का साधन है । रानी के आचरण को आधुनिक राजनेताओं के संस्कारों में देखा जा सकता है । तेंदुआ नाटक मेंमि॰मदान और मि॰ रेनूराय जैसी भद्र महिलाओं का पाशविक अत्याचार सोद्देश्य दिखाया गया है । जो नाजियों के उस शोषक आचार का प्रतिरूप है । इस प्रकार प्रतीक नाटकों पर राजनीतिक चेतना का प्रभाव देखा जा सकता है ।

2. सामाजिक चेतना से प्रभावित राजनैतिक स्थिति:-

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में जब हम हिन्दी नाट्य साहित्य का अध्ययन करते हैं तो समकालीन नाटकों पर राजनीति का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है । आज समाज में अन्तर्जातीय और प्रेम विवाह को समर्थन मिल रहा है । विधवा विवाह को समाज द्वारा मंजूरी मिल चुकी है । पश्चात्य जीवन से प्रभावित स्वेच्छाचारिता ने सम्बन्ध विच्छेद और तलाक के अनुमोदन= अनुमोदन दे दिया है । पहले प्रेम और यौनकी सामाजिक मान्यता पति-पत्नी के सम्बन्धों तक ही सीमित थी नई प्रगतिशील चिन्तन और समझके फलस्वरूप विवाह प्रेम (पूर्व) को मान्यता मिल गयी । जिसके

कारण अन्य पुरुषों स्त्रियों की तरह विधुर, विधवा और परित्यक्ता नारियों में भी स्वच्छंद काम की प्रवृत्ति देखने को मिलने लगी, जिसके कारण भीतर ही भीतर अनेक विकृतियों ने भी जन्म लिया। जिसके कारण पारीवारिक एवं सामाजिक सम्बन्धों में विघटन की शुरूआत हुई। समकालीन नाटकों में सामाजिक समस्यायें और व्यापक राजनीतिक सन्दर्भ दोनों एक साथ अभिव्यक्त हैं। आज का नाटककार किसी एक ही विन्दु पर केन्द्रित न होकर जीवन के खण्ड खण्ड अनुभवों अनुभवों को वाणी देकर समग्र परिवेश को दर्शकों के सम्मुख साकार कर देना चाहता है। व्यक्ति के धरातल पर सेक्स और समाज के धरातल पर भ्रष्टाचार और राजनीति एक साथ नाटकीय-अभिव्यक्ति पा गये हैं। विश्वविद्यालय के भ्रष्टाचार पर व्यंग्य करते हुए श्री शरद जोशी ने अपने एक नाटक अन्धों का हाथी के एक अन्धे पात्र से उगलवाते हैं कि एक विश्वविद्यालय से इसी विषय पर मैं पी०एच०डी० ले सकता हूं। वहां का हेड आफ द डिपार्टमेन्ट मेरी जाति का है, यार कुछ भी लिख ला और ले जा पी०एच०डी०। आज की सामाजिक व्यवस्था का नियामक आदमी किसी का शोषण ही नहीं करता, वरन् वह संसार की प्रत्येक वस्तु पर अपनी गिद्ध दृष्टि रखता है। सत्ता और व्यवस्था की यह दुमुंही नीति आजके नाटकों में खुलकर अभिव्यक्त हुई है। आज पति-पत्नी, बॉस कर्मचारी भाई-बहन, और प्रेमी-प्रेमिका के सम्बन्धों में एक नवीन दृष्टिकोण स्थापित हुए है। मोहन राकेश के आधे अधूरे की सफलता के बाद अनेक नाटककारों ने ऐसे प्रयोग किये है इस दृष्टि से रमेश बक्षी का देवयानी का कहना है एवं वामाचार तथा सुशील कुमार सिंह का चार यारों का यार विशेष उल्लेखनीय है। नाटककार मणिमधुकर की सहानुभूति समाज के पीड़ित शोषित और सर्वहारा लोगों की जमात के साथ हैं। समाज में शोषित और शोषक का सम्बन्ध प्राचीन काल से ही चला आ रहा

है । कहीं यह सम्बन्ध निरंकुश , राजा, अत्याचारी, जमींदार, निर्दयी सूदखोर, भ्रष्टमन्त्री, नेता अथवा पाखंडी, धर्मगुरू, और निरीह प्रजा के बीच मौजूद है । अथवा कहीं व्यक्तिगत अथवा पारिवारिक सामाजिक स्तर पर स्त्री-पुरूष के विडम्बना पूर्ण स्वार्थी रिश्तों के रूप में विद्यमान है । इस प्रकार मणिमधुकर के नाटकों में राजनीति और स्त्री पुरूष के सम्बन्धों को एक साथ प्रस्तुत करके सम-सामयिक जीवन और समाज की एक समग्र तस्वीर प्रस्तुत करने का प्रयत्न कियागया है। मणिमधुकर के खेला पोलमपुर तथा बुल-बुल सराय में मूलत: निरंकुश शासन व्यवस्था द्वारा समान्य जन में भय, अत्याचार, और अन्याय के आतंक द्वारा शोषण करने और उसे अपने निहित स्वार्थों के लिए प्रयोग में लाने का चित्रण किया गया है । दुलारीबाई में व्यक्ति और समाज की विडम्बना पूर्ण स्थितियों तथा जड़तापूर्ण नारी सम्बन्धों को स्वस्थता पूर्ण धरातल पर प्रतिष्ठित करने की चेष्टा कीगयी है । "इकतारेकी आँख" के माध्यम से व्यक्ति और समाज की विडम्बना पूर्ण स्थितियाँ तथा जड़ता पूर्ण नर-नारी सम्बन्धों को स्वस्थ मानवीय धरातल पर प्रतिष्ठित करनेकी चेष्टा की गयी है तथा सुंतकबीर के माध्यम से आज के युग मेंव्याप्त धार्मिक आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक विडम्बनाओं तथा स्थितियों को उभारने का प्रयास किया गया है । समकालीन नाटकों में सामाजिक सन्दर्भों के खोज के बहाने यह कहा जा सकता है कि सामाजिक कुरीतियों को पहले की भांति आदर्शवादिता की ओर नहीं मोड़ा जा रहा है बल्कि समूची व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाकर समस्याओं को सकारण प्रस्तुत करते हुए एकआमूल चूल परिवर्तन की ओर इशारा किया जा रहा है ।

समकालीन प्रतीक नाटकों में राजनैतिक लक्ष्य हीनता से सामाजिक स्थिति पर भी पर्याप्त प्रभाव पड़ा है । डा लाल के नाटक नयी जीवन

भंगिमा पर आधारित है । इनमें समकालीन राजनैतिक विसंगतियों के कथ्य को निकट लाने की सामान्य प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है । "कल्की" नाटक में सामाजिक चेतना से प्रभावित राजनैतिक स्थितियों का सफल प्रयोग दृष्टिगोचर होता है । "सूखा सरोवर" गणतन्त्र के मूल मानवीय संकल्पों से विच्छेदित होने की स्थिति का ज्ञान कराता है । रक्त कमल नाटक में जनतन्त्री दलालों को यथार्थजीवन को अभिव्यक्ति मिली है ।

अब्दुल्लादीवाना गणतन्त्र में राष्टीयकरण की डुग्गी के धरातल पर खड़ा है । पंच पुरुष में पंचायती चुनाव का दंगल और ग्रामीण सामन्तशासन एवं शोषण व्यवस्था की असंगति का दृश्य उभारा गया है । समकालीन प्रतीक नाटक में इन रचनाकारों ने गणतन्त्रीय प्रशासन के अत्याचार एवं अपहृत मानव अनुभूतियों को बारीकी के साथ अंकित किया गया है । इसमें स्वतन्त्रता के बाद उत्पन्न हुई विकृत राजनैतिक गतिविधियों का पूरा अहसास है । जहाँ पर शम्बूक की हत्या नाटक में सामाजिक न्याय की रक्षा के लिए आवाज उठाता है, वहीं पर ज्ञानदेव अग्निहोत्री का शुतुरमुर्ग गणतन्त्रीय प्रबन्धों को अतीव निर्ममता से नोचता है । इसका सीधा और तीखा व्यंग्य वर्तमान राजनैतिक जीवन राजनैतिक दल तथा सरकारों में हो रही धांधलेबाजी, अवसरवादिता, अनियमितता एवंअन्याय को अभिव्यक्त करने में सम समर्थ हुआ है । मणिमधुकर का रस गन्धर्व राजनैतिक रासलीला की ऐसी ही विद्रूपता को अभिव्यक्त करता है, सुरेशचन्द शुक्ल का नाटक भस्मासुर अभी जिन्दा है, सत्तालोलुप रचनाधर्मियों की अमानवीय भावनाओं को अभिव्यक्ति देती है । डा० लक्ष्मीनारायण लाल का कर्फ्यू मनुष्य के भीतर सभ्यता संस्कार, मर्यादा, आचार, के कर्फ्यू का प्रतीक है । मनुष्य लुके छिपे समाज की आड में अपनी आदिम रागात्मक प्रवृत्तियों को भोगता है । सभ्यता और संस्कार का कर्फ्यू नाटकके चारों पात्रों को कुछ देर के लिए बाँधे रखता है । लेकिन अवसर पाते ही वे इस कर्फ्यू कोतोड देते हैं । इस नाटकमें

पारिवारिक दायरे की कुंठायें और असन्तोष सामाजिक जीवन में रूप बदलकर विस्तार पाते हैं। कविता, संजय और गौतम का त्रिकोणात्मक दाम्पत्य जीवन अतृप्ति और असन्तोष का बोधक है। तो मनीषा का प्रसंग स्थापित नैतिक मूल्यों और सामाजिक कायदों को कटघरे में खड़ा करता है। त्रिशंकु नाटक में नाटककार ने एक शिक्षित युवक के चरित्र द्वारा दिग्भ्रान्त होकर भटकनेवाली युवा पीढ़ी की पीड़ा को उभारा है। सरकारी अफसर नेता, क्लर्क. ज्योतिषी, सिपाही, लड़की आदि के बीच युवक त्रिशंकु सा टकराता है।

आज नहींतो कल नाटक में जनता की प्रतीक युवती पात्र अपने मानसिक तनाव को व्यक्त करते हुए कहती है ⁸ कहा गये सारेवादे ? ---- कहां गये सारे सपने ? ---------- ओ हमें दूसरी आजादी का ख्वाब दिखाने वालो। क्या तुम्हारी आजादी का मतलब यही थाकि हर रोज सरेआम हमारी अस्मत नीलाम हो ⁸ क्षणिक मौन⁸ हमें कुयें से निकालकर खाईं में ढकेल दिया गया अब हमारे एक ओर कुआं है, दूसरी ओर खाई, किधर जायें? 10. समकालीन भ्रष्ट नेता राजनीति से नीति निकालकर "राज" कर रहे है। देश विदेश से करोड़ों का कर्ज लेकर अपना घर भरते जा रहे हैं। और पिस रही है, निरीह जनता। तू-तू नाटक में शराबी एक कहता और इसी तरह इस बस्ती के रहने वालों के हरेक सर के हिसाब से एक लाख काकर्ज है। जो हमारी मृत्यु के बाद हमारे बच्चों के कन्धों पर चट्टान बनकर रहजायेगा इसतरह सदियों तक यह चट्टान कन्धे से कन्धा मिलाकर सबको शिथिल और खण्ड खण्ड कर देगा। कोई इस पत्थर से बचानहीं है। सब बारी बारी से कुचले जा रहे हैं। 11. इन नाटकों के अतिरिक्त कथा एक कंस की, सम्भवामि युगे युगे एक गधा था, उर्फ अलादाद खां बत गन्धर्व, रोशनी एक नदी है आदि अन्य अनेक नाटकों में राजनीति से उत्पन्न मानसिक कुंठा तनाव

आदि को अभिव्यक्त किया गया है ।

इस प्रकार आज का उच्च वर्गीय समाज अत्यधिकयौनाचार, स्वच्छंदता से कुंठित है, वहीं मध्यमवर्ग आर्थिक संकट, बेरोजगारी, अन्धानुकरण, के कारण टूटते सामाजिक राजनैतिक मूल्यों के कारण अत्यधिककुंठित तथा तनावग्रस्त है । एक ओर वह वैयक्तिकता के आधार पर सामाजिक मूल्यों से विरोध करता है तो दूसरी ओर वह समाज से जुड़ा रहना भी चाहता है ।

3. समकालीन राजनीति का प्रतीक नाटकों पर प्रभाव:-

जैसा कि स्पष्ट किया जा चुका है कि एक ओर राजनीति ने निम्न वर्ग में चेतना नारी, समानता, ग्राम विकास, वोट प्रणाली, द्वारा व्यक्ति के महत्व को बढ़ावा दिया, वहीं दूसरी ओर राजनीति के भ्रष्ट स्वरूप ने जनसाधारण में कुंठा निराशा त्रासदी, को विकसित कर राजनीति को घिनौना व्यवसाय के रूप में स्थापित किया है ।

समकालीन प्रतीक नाटकों में जहाँ राजनीति से उत्पन्न "चेतना" को अभिव्यक्त किया गया है वहीं दूसरे ओर सत्ता लोलुप तथाकथित राजनीति से उद्भूत तनाव निराशा व आपाधापी से त्रस्त आम आदमी की मन:स्थिति को भी चित्रित किया गया । "कपास के फूल" नाटक में गांधी जी के सन्देशों से पनप रही राजनीतिक के आदर्शों को उजागर किया गया है । इसके पात्र सरदार, रामू, जमींदार, आदि ऊँच नीच के बैरभाव को भूलकर गाँव की उन्नति में एक दूसरे को सहयोग देते हैं। इसी प्रकार "अमर ज्योति" नाटक में आजादी के बाद बढ़ते हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य को भाई चारे व सहयोग द्वारा समाप्त कर देश द्रोही को नष्ट करने का आह्वान किया गया है । इसके अतिरिक्त पौराणिक कथ्यों एवं प्रतीकों के माध्यम से सद्य: स्वतन्त्र भारत

---228

की राजनैतिक परिस्थितियों का चित्रण कियागयाहै । पहला राजा नाटक अपने पात्रों के माध्यम से तत्कालीन नेताओं का चित्र उपस्थित करता है । जोकथावस्तु के द्वारा आजादी के बाद के भारत का रूप मनस पटल पर अंकित करदेता है । इन नाटकोंके अतिरिक्त अन्धेरे का बेटा नेफा की एक शाम आदि नाटकों में राजनीति देशप्रेम त्याग पर आधारितराजनीतिक चेतना परिलक्षित होती है। स्वतन्त्रता के पूर्व तथा कुछसमय उपरोन्त हमारे देश की राजनैतिक स्थितिजहाँ आदर्श युक्त थी, वहीं टूटी तथा साठो दशक तक आते आते यथार्थ और भौतिक चेतना से युक्त हो गयी ।

साठोत्तर युगीन परिवेश में "निरन्तर" बढ़ रही मंहगाई बेरोजगारी जनसंख्या वृद्धि शिक्षा के गिरते स्तर तथा सत्ता प्राप्ति की होड़ ने राजनैतिक मूल्यों को विकृत कर दिया ।

समसामयिक युग की राजनीति का युग है, आजाद भारत के संवैधानिक अधिकारों ने जनसाधारण को राजनीति के सम्मुख ला खड़ा किया है । यही कारण है, कि आज राजनीति आम आदमी के चर्चा काविषय बन चुकाहै । समकालीन युग का नेता धन की थैलियों में बिक रहा है । और इन थैलियों में बिक रही है आदर्श व नैतिकता की सीमाओं को तोड़ती राजनीति । जीवन में कोई अनुशासन नहीं रहगया और देश के व्यापक हित के स्थान पर स्वार्थ एवं स्वरति का प्राधान्य हो गया । पुराने नेता विलासी ऐयाश, और धनलोलुप बन गये । 12.

आधुनिक राजनैतिक युग में ग्राम्य जीवन में भी नवीन चेतना व स्वअस्तित्व बोध की लहर आ गयी है । क्या किसान, क्या मजदूर, क्या साधारण सभी अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गये हैं । ग्रामीण युवा वर्ग विशेष रूप से उत्साही और जागृत हुआ है । "कपास के फूल" में रामू कहता है, "काहे केरी जमींदार सब अपने घर के राजा हैं पंचायत का राज है ।

अब तो वे दिन हवा हुए जब पसीना गुलाब था ।3.

राजनीतिक चुनाव प्रणाली ने शहर से गांव तक विषैला वातावरण बना लिया है । हमेशा से शान्त स्थित रहने वाले गांवों में अब बेचैनी और तनाव का वातावरण फैलता जा रहा है । गांवों में जहां सामूहिकता तथा बुजुर्गों के प्रति आदरभावना, आदर्श तथा नैतिकता बनी रहती थी, वहां युगीन राजनीति ने नई वैचारिकता एवं वैयक्तिकता को जन्म देकर इस भावना को हरासोन्मुख किया है । राजनीति से व्याप्त चहुओर के इस वातावरण का चित्रण समकालीन नाटकों में अत्यधिक तीखे व पैने ढंग से किया जा रहा है । आज नहीं तो कल, सिंहासन खाली है, शुतुरमुरग, राम की लड़ाई, भस्मासुर नागपाश, कथा एक कंस की, एक गधा था, उर्फ अलादाद खां, अन्धों का हाथी, पहला राजा, बकरी आदि नाटक बखूबी से बदले राजनीतिक तेवरों का यथार्थ चित्रण करते हैं ।

डा० लाल के नाटक समकालीन राजनैतिक विसंगतियों को बड़ी बखूबी से उभारते हैं । "कलंकी" नाटक में गणतन्त्रीय प्रावधानों की प्रतीक्षा में शक्तिहीन व ज्योतिहीन हो रही पीढ़ी का चित्रण किया गया है ।

"सूखा सरोवर" लोकतान्त्रिक मूल्यों में हो रहे विघटनकारी तत्वों को उद्घाटित करता है ।

पंचपुरुष और राम की लड़ाई नाटक चुनावी दंगल और ग्रामीण जनों के प्रति हो रहे राजनैतिक अत्याचारों का पर्दाफाश करते हैं ।

समकालीन स्वार्थयुक्त और आपाधापी की भ्रष्ट राजनीति ने चुनावों को लोकतान्त्रिक पद्धति नहीं अपितु स्वार्थपूर्ति हेतु डाकाजनी बना दिया । राम की लड़ाई में विमला कहती है, " यह एक के डांडे फटकारते रहे, यह आजादी नहीं गुलामी है । यह मतदान नहीं डाकाजनी है । भारत माता का श्राप लगेगा । सारे गांव जंवार से कह दिया कि जब चुनने

को कुछ नही है, तो चुनाव किसका । उसी रात मेरे साधु पिता की हत्या ---------14. चुनाव की व्यवस्था ने समाज की सामूहिकता, त्यौहारों आदि को प्रभावित किया है नेताई के शब्दों में § आप समझते नहीं, इलेक्शन का असर हर चीज पर है, हर चीज का असर इलेक्सन पर है ।5. इसी कारण गांव का उत्साह और उल्लास समाप्त होता जा रहा है । "सुनो पंचों सुनो गपोले पाड़े जोपरशुराम बनने वाले थे उन्हें नेताई ने फोड़ लिया । कहा- ओ गपोले यही वक्त है, साफ कह दो जनक- और विश्वामित्र से ग्राम पंचायत चुनाव में अगर सारा गांव वोट दे मुझे तभी परशुरामका पार्ट करुंगा । हाँ नहीं तो ।6. यही नहीं चुनाव प्रणाली ने देश में आर्थिक विषमता तथा पूंजीवाद को बढ़ावा दिया है । "वाह रे इन्सान" नाटक का सेठ सम्पतराय थैली में बिकने वाले नेता के लिए कहता है, -"बस, बस रहने दो अपनी फिलासफी । को --- उनको इलेक्सन के लिए टिकट सम्मपत राय दिलवाता है, अगर चुनाव में जीत होतीहैतो सम्पत राय के बलबूते पर । इलेक्सन का चन्दा एकत्र करने के लिए वो सम्पत राय की ड्योढ़ी= ड्योढ़ी पर घण्टों खड़े रहते हैं । और तुम मेरे सामने उन्हें देवता बना रहे हो ।

जनता अपने प्रतिनिधि को चुनकर नेता बनाती है, किन्तु समकालीन नेता अपने व्यक्तिगत स्वार्थ हेतु देश कल्याण व समाज सेवा को त्यागकर दल बदलू बन जाता है । अर्थात जिधर हवा देखते हैं खिसक जाते हैं । अत्याचार के प्रति विद्रोह करने वाले "विरोधी लाल सत्ता प्राप्ति हेतु सुबोधी लाल बन जाताहै ।8. राम की लड़ाई में मसखरा कहता है, "मतलब यह है, कि आज से चालिस साल पहले आप ही इस गांव में तिरंगा झण्डा लेकर आये, पांच साल बाद समाजवादी झंडा लाये, तिरंगे झण्डे को उल्टाकर झोला सिला लिया फिर तीन साल बाद लाल झण्डा लाये और समाजवादी झण्डे से जूता साफ करने लगे ।9.

भस्मासुर नाटक में दल बदलू नेता पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि

"ये देखो ———ये जो सफेद टोपी लगाये हुए है, न ———9 अभी उधर से बबे= जायेगा तो हरीटोपी लगाये होगा ————फिर उधर से लौटेगा तो सफेद टोपी लगाये होगा ——फिर उधर से जायेगा तो भगवी टोपी ——— फिर ———ये तब तक टोपियाँ लगायेगा उतारेगा जब तक मन्त्री नहीं हो जायेगा । 20• इस कथन से यह अर्थ निकलता है, कि समकालीन नेता मानवतावादी भावनाओं से प्रेरित होकर देश व जनता की सेवा नहीं करता अपितु धन प्राप्ति हेतु राजनीति में भाग ले रहा है और उसकी सारी उठा पटक और दल बदले की इतिश्री कुर्सी प्राप्त हो जाने पर समाप्त हो जाती है इससे पूर्व वह टोपी बदलने के साथ साथ जनता में साम्प्रदायिकता धर्म, भाषा, व प्रदेश वाद के काँटे बोकर अपना उल्लू सीधा करता रहता है । समकालीन नेता का प्रतीक चाचा कहता है "————सीट खाली कर दूं——जनता में फूट पैदा कर दूं या जात-पाँत से काम लूं9 कुर्सी पाने का सबसे बड़ा शास्त्र तो यही ——— 21• नेतागण अपने वोट की चिन्ता में लगे हैं, जनता की कोई चिन्ता नहीं चाचा कहता है, " नेता लोग कहते आये हैं, गरीब मरे तो पाप नहीं लगता, वोट कम हो जाता है, अगर अपने को हाई यानी ऊँचा बबबइ बनाना चाहते हो तो दूसरो का हक छीन लो । दूसरों के अरमान कुचल दो । गला घोट दो, 22• नेता वोट प्राप्ति हेतु साम्प्रदायिक भावना का राजनीति मोहेर के रूप में उपयोग कर समाज में विष वपन कर रहे हैं । भस्मासुर नाटक मेंस्वार्थी नेताओं की भ्रष्ट राजनैतिक चालों का पर्दाफाश किया जाता है, ।

सेक्रेटरी (डायरी खोलते हुए) इधर तीन माह तक तो आप बिल्कुल बुक हैं, साहब कल जमशेदपुर पहुँचना है, हिन्दुओं को यह बताने कि मुसलमान तुम पर हमला करने वाले हैं । और मुसलमानों को यह बतलाने कि बचा हिन्दू तुम्हें मार डालेंगे । ———23• चुनावों के समय दंगे फसाद का सहारा लेकर जीतना आम बात हो गयी है । भस्मासुर में नेता कहता

"दंगा फसाद तो अपने बायें हाथ का खेल है, 24. आज नहीं तो कल नाटक मैं नेता की स्वार्थमूर्ति को व्यंग्य द्वारा उदघाटित किया गया है। "हरिजन समस्या इस देश की सबसे बड़ी समस्या है, और एक महत्वपूर्ण कुंजी है सत्ता में बने रहने के लिए ----इसलिए सुबह शाम हरिजनों का नाम जपो ----------हरि मिल जायेगा। -------जन की परवाह मत करो। 25. राम की लड़ाई में धूर्त नेता तथा उसके साथ मिले धनी वर्ग द्वारा लोकतांत्रिक मूल्यों के हनन पर प्रकाश डाला गया है "नेताई- वाह-वाह। ऐसा ऐसा इलेक्शन फिर कभी नहीं आयेगा।

शाह जी, एक वृक्ष की लुटाई में पाँच हजार रुपये 26.

इसी प्रकार आज का नेता येन केन प्रकारेण कुर्सी प्राप्त करने में लगा है, देश व जनता का हित उसके हित के सामने नगण्य हो गया है। गणतन्त्रीय मूल्य स्व उदर पूर्ति के भार से दबे जा रहे हैं नेता नित नये अपने नारे, झूठे आश्वासन, रचकर जनता को मूर्ख बना रहा है। और भोग विलास में लीन है। "भस्मासुर" में इस तथ्य को उदघाटित किया गया है।

"दूत ------नव नेताजी को जरूर जानते होंगे, ? नहीं जानते, इत- कहीं दिखे, ? किधर है ? मन्त्री -----(शोलेमन से) ढाई साल पहले दिखे थे, साहब......

पुरुष - उससे हमेशा पहले, हर पाँचवे साल दिखते हैं। 27. इस नाटक में नाटककार ने व्यंग्यात्मक शैली द्वारा नेता की स्वार्थवृत्ति को उदघाटित किया गया है। और जहाँ तक रेस की बात है हर चुनाव में जीतने के बाद हमारी और जनता की हमेशा रेस चलती रही है, 5---- कन्टीन्यू----पाँच पाँच साल तक पर हम पकड़ में कभी नहीं आये। तुम भी लगा लो रेस। 29.

राष्ट्रीय आजादी के बाद जिस स्वराज्य की कल्पना भारतवासियों ने की थी, उसे भ्रष्ट राजनीति ने तोड़ दिया। सामन्तशाही को तो पतन हो

गया, किन्तु समकालीन नेता सामन्तशाही का ही आधुनिक रूप है, जिसकी छत्र छाया में पूंजीपति तस्कर, तथा गुण्डे निश्चिन्त पल रहे हैं, या कहें कि अधिकांश चरित्रहीन पूंजीपति ही नेताओं की ~~कृपद~~ कृपादृष्टि के कारण अपने काले धन को सफेद धन में परिवर्तित कर धर्मात्मा बने हुए हैं। इस प्रकार आज की भ्रष्टराजनीति देश की आर्थिक व्यवस्था तथा अर्थ सन्तुलन को व्यापक रूप से प्रभावित किये हुए हैं।

4. चुनाव प्रणाली एवं दलगत नीति का प्रतीक:नाटकों पर प्रभाव :-

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात एवं इस राजनैतिक आन्दोलनों चुनाव प्रणाली व दल बदल कीनीतियों तत्कालीन नाट्यकारों को बड़ी गहराई के साथ प्रभावित करने लगी थी, और यही घटनायें तत्कालीन रचनाधर्मियों का कथानक भीबनने लगी थी। सन्1965 में भारत पाक समझौते के बाद एक राजनैतिक नवजागरण आया जिससे प्रभावित होकर नये नाटक लिखे गये। सत्ता प्राप्त करने की होड़ ने बदल-बदल नीति को जन्म दिया। नेतागण एक पार्टी को ~~बदल=दिया=~~ को छोड़कर दूसरी पार्टी में सम्मिलित होने लगे। यह दल बदल इस सीमा तक पहुँच गया कि जनता द्वारा चुनकर भेजे गये प्रत्याशी संसद में पहुंचकर भी दूसरी पार्टी में सम्मिलित होने लगे। इस छिछली राजनीति से देश के विभिन्न राज्यों में स्थायी सरकार न बन सकी। क्योंकि कभी किसी दल को बहुमत मिलता या किसी दल को बिल्कुल न मिलता। इस दल बदल की राजनीति के कारण चुने हुए प्रतिनिधियों पर भी अविश्वास जनता द्वारा होने लगा इसका प्रभाव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पड़ा। अन्य देशों में यह आशंका बन गयी कि भारत में किस दल को सत्ता प्राप्त होगी, और सरकार किस पार्टी की बनेगी, इस कारण देश में अस्थिर राजनीति ने जन्म ले लिया। देश का नेतृत्व अस्थाई और विश्वास हीन व्यक्तियों के हाथ में होने के कारण सज्जन और विचार मान व्यक्तियों ने राजनीति से सन्यास ले लिया देश की राजनीति में सर्वत्र चरित्रहीन स्वार्थान्ध व्यक्तियों का बोल बाला हो गया। जिनके अत्याचारों से भारतीय जनता

पिसने लगी, जिसका पूरी छाप समकालीन प्रतीक नाटकों पर पड़े बिना न रह सकी । सन् 1968 में प्रकाशित ज्ञानदेव अग्निहोत्री का नाटक शुतुर्मुर्ग आज के सत्ताधारी राजनीतिज्ञों का सटीक प्रतीक है । शुतुर नगरी के राजा और उसके मंत्रियों के माध्यम से देश में गरीबी भुखमरी, अकाल, अभाव आदि की ज्वलन्त समस्यायें से जानबूझ कर अनजान बनते हुए सत्ता धारियों द्वारा बड़ी बड़ी योजनाओं के बड़े वायदे, भ्रष्टाचार शोषण, राजकोष की व्यर्थ बरबादी, जनता से झूठे आश्वासन, एवं जन भावनाओं के साथ खिलवाड़, आदि प्रसंगों का व्यंग्यात्मक प्रदर्शन किया गया है । अकाल और भूख से पीड़ित जनता हाहाकार कर रही है । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पहले की जो राजनीति थी, वह गरम दल और नरमदल की राजनीति थी, जिसका उद्देश्य देश प्रेम, और जनसेवा थी, केवल दोनों दलों के बीच वैचारिक प्रेम मतभेद थे । अंग्रेजों की फूट डालो, और राज करो की नीति से मुस्लिम लीग की स्थापना हुई, कांग्रेस में भाग ले रहे मुस्लिमों के सक्रिय दल मुस्लिम लीग में शामिल होने लगे ।

कालान्तर में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात गणतंत्रीय व्यवस्था के अनुसार चुनाव प्रणाली ने भारतीय जनता को वोट डालकर अपना नेता चुनने और अपना तथा देश का निर्माण कराने का अवसर दिया । समय समय पर जनता ने अपने विवेक का परिचय भी दिया । 1977 में आपात स्थिति के दौरान हुई राजनैतिक मनमानियों के विरुद्ध क्रोध व्यक्त करते हुए जनता ने कांग्रेस पार्टी को सत्ता रहित कर - 397

भारत देश में जहाँ अधिकांश जनता अशिक्षित एवं गरीब है, अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं कर पाती, नेता पाँच पाँच रुपये, एक शराब की बोतल अथवा कम्बल में भारत की बागडोर खरीदकर लेते हैं । नेता चुनाव के

समय जनता को गरीबी हटाओ, "काम दिलाओ" आदि झूठे आश्वासन देकर भोली भाली जनता को बहकाकर चुनाव जीत लेते हैं, और कुर्सी प्राप्त कर लेने के बाद देश व जनता को ताक पर रखकर व्यक्तिगत महत्वाकांक्षायें पूरी करने में लग जाते हैं। समकालीन नेता धर्म जाति भाषा क्षेत्रआदि दुर्बल प्रवृत्तियों को मोहरे बनाकर राजनीति के दांव पेंच का अखाडा बना दिया है।

३०७ लोकतांत्रिक देश का नेता गुण्डागर्दी भ्रष्टाचार धन व बल के आधार पर चुनाव जीतकर प्रतिनिधि बन गरीब जनता का शोषण करता है। इस प्रकार दलगत नीति पर आधारित लोलुपता और भ्रष्टाचार जैसी दुष्प्रवृत्तियों के कारण ये योजनायें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असमर्थ रही, कुछ योजनायें कागजी बनकर रह गयी, आर्थिक विषमता की इन परिस्थितियों ने भौतिकता की ओर उन्मुख किया। "धन की सत्ता" ने अपने अर्थ को ईश्वर के स्थान पर प्रतिष्ठित कर व्यक्ति अपना दास बना लिया। इसलिए आज का व्यक्ति पैसे को मानवता से भी उच्च मान बैठा है। वह धन के वशीभूत हुआ, उसमें ही सब सम्बन्धों नातों को देख परख रहा है। इस अर्थमय व्यक्ति की मनःस्थितियों संवेदनाओं और सहानुभूतियों को आलोच्य कालीन नाटक सच्ची - अभिव्यक्ति दे रहा है। अर्थ से केन्द्रभूत हुए उसके कार्य कलापों को उजागर कर रहा है। अर्थाभाव से बिखरे रेशे रेशे हुए व्यक्ति का चित्रण घरौंदा, आधे-अधूरे, रुपया तुम्हे खा गया, एक और अभिमन्यु, आदि नाटकों में किया गया है। भस्मासुर अभी जिन्दा है, नाटक में लाल मणि कहता है, कि "पैसे पर ही तो मुझे भरोसा था, आज पैसा ही तो राजा है, जिसको चाहो खरीद लो। 30. आधुनिक अर्थव्यवस्था ने सत्ता को खरीदा है। जनता को खरीदा है और अब देश की कानून व्यवस्था को खरीद रही है। अतः "किम्" नाटक में तस्कर वीरसेन पैसे के बल पर खरीदी हुई पुलिस को सम्बोधित करते हुए

कहता है ,वीरेन (वीरसेन हंसता है,) पुलिस --------मुट्ठी दिखलाता हुआ इसमें इसमें बूंद है पुलिस भाभी पुलिस के सात पुश्त की मजाल की वहमेरी पीठ पर हाथ रखे ----------उसका महावर बंधा हुआ है । भाभी तुम सचमुच औरत हो, ------(हंसता है 31. समकालीन आर्थिक परिवेश में धन का ऐसा डंका बज रहा है, जिसके आगे लोकतन्त्र नाच रहा है । और नेता घुटने टेक स्तुतिगान गा रहा है । नेता अपनी नीतियों को रुपयों की थैलियों पर न्योछावर कर रहा है । पूंजीपति अपने लाभ के लिए नेताओं को खरीद रहा है । भस्मासुर अभी जिन्दा है, नाटक में सेठ मलूक दास और धूर्त नेता लालमणि के संवाद इस तथ्य को उजागर करते हैं:-

मालूकदास:- यदि जंगल का ठेका मिल जाये तो कुछ फायदा हो सकता है । अब ठेका मिलने का समय भी आ गया है ।

लालमणि:- सोचते हुए जंगल का ठेका (मालूकदास) (हां)

लालमणि:- " पर इसके लिए" तो वन विभाग के मिनिस्टर को पटना होगा और वह एक लाख से कम क्या लेगा ?

इस प्रकार आधुनिक युग की भ्रष्टाचार से लिपटी अर्थनीति ने नौकरशाही वर्ग को भी प्रभावित किया है ।

5. आर्थिक विषमता:-
================== सामाजिक व्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए तथा मनुष्य के भौतिक उन्नयन और धार्मिक विकास के लिए अर्थ प्रयोजन अनिवार्य है । सामाजिक मर्यादाओं के निर्वाह हेतु अर्थ सम्पन्न व्यक्तियों पर आश्रित रहना स्वाभाविक है । सामान्यतया महाजन, व्यापारी, बड़े कृषक, व जमींदार आदि वैभव शाली व्यक्ति अपने स्वाभावानुरूप इन निर्धनों का आर्थिक शोषण निर्दयता पूर्वक करते रहे हैं । समकालीन प्रतीक नाटककारों ने अपने प्रतीक नाटकों में ऐसे शोषित वर्ग के प्रति घृणा उत्पन्न की, जिनके प्रदर्शन के अवलोकन मात्र से ही प्रेक्षक वर्ग को आत्मग्लानि का अनुभव होने लगा पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों की भांति सम-सामयिक,प्रतीक नाटकों में अर्थव्यवस्था,

तथा आर्थिक वैषम्य का सशक्ततम रूप उभरा है, शील ने तीन दिन,तीनघर आवश्यकतानुसार वर्ग भावना पर आधारित विचारों को दर्शाया है । मध्यम वर्गीय पात्र प्रभात अर्थशोषण के प्रति कहता है " यह पूँजीवादी अर्थ नीति का ही नतीजा है, कि उच्च शिक्षा इतनी मंहगी है कि अस्सी प्रतिशत बालक साक्षरता का दोष लेकर बेकारी का शिकार होते रहते हैं । धनियामों के बेटे ऊँचे ऊँचे पदो पर कब्जा करते हैं, यह वर्गीय व्यवस्था नहीं तो और क्या 32. कार्ल मार्क्स के साम्यवादी चिन्तन के फलस्वरूप देशमें महाजनी सभ्यता के खिलाफ वर्गभेद जनित आस्थाओं को प्रतिष्ठा मिली है । श्रम, भूमि एवं पूँजी इन तीन निर्माण कारी तत्वों की सहायता से मार्क्स ने साम्यवाद का गठन किया । आर्थिक असन्तुलन के परिणाम स्वरूप आज व्यक्ति का व्यक्तित्व उखड़ा उखड़ा सा लगने लगा है । आर्थिक दृष्टि से हीन लोगों का आज समाज में कोई व्यक्तित्व नहीं रह गया है । अर्थाभाव के कारण देशवासियों का पतन होना स्वाभाविक है, अर्थसम्पन्नता व्यक्तियों के ऐश्वर्य और विलास पूर्ण जीवन के प्रति आकृष्ट होकर निर्धन व्यक्तियों में स्वाभाविक रूप से कृत्रिमता बढ़ने लगती है जैसा कि सामान्यतया निर्धन परिवार में तड़क भड़क आदि । स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश अनेक उद्योग धन्धों कुटीर उद्योग तथा कृषि पर विशेष महत्त्व दिया गया परन्तु जनसंख्या की वृद्धि के कारण गरीबी बढ़ती रही । परन्तु निम्न वर्ग में विशेष जागृति आयी ।

दरिन्दे नाटक में निम्न वर्ग के प्रतीक शेर, भालू, लोमड़ी आदि आदि आदमी जो उच्च वर्ग का प्रतीक है, के अत्याचारों के विरूद्ध आवाज बुलंद करते हैं, "मेरे विचार में हम सबको एक युनियन बनानी चाहिए जानवर युनियन । लड़ने के लिए 33वें है क्रान्ति द्वारा अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए उद्यत हैं । रोटी कपड़े के लिए, रहने के लिए, मकानके लिए, और आत्म सम्मान हेतु बराबरी का दर्जा पाने के लिए उनको पूर्ण विश्वास भी है कि

"सबको बराबरी का दर्जा मिलेगा" 34 स्वतन्त्र भारत की जनता अपने अधिकारों अपनी जरूरतों को अधिकार पूर्वक माँग रही है ।

" आज उम्मीदवार और मतदाता दोनों पाँच पाँच रुपये में बिक रहे हैं । यहाँ तक कि रास्ते की बाधा साफ करने के लिए हत्या तक कर डालना मामूली बात हो गयी है ।

उस दिन सुबह से ही तीनों पार्टियों के लोग झोले में पिस्तौल रुपया, हथगोला, भरे पिता जी के पास आते रहे । इस तरह से दबाव डालकर अपने हक में वोट लेने के लिए और जब वह एक को डाटते फटकारते रहे यह आजादी नहीं गुलामी है, यह मतदान नहीं डाकाजनी है, भारत माता का श्राप लगेगा सारे गाँव जुवार से कह दिया कि जब चुनने को कुछ नही है तो चुनाव किसका । उसी रात मेरे पिता साधु की हत्या 36. आज का नेता आदर्श, देशसेवा त्याग जनकल्याण आदि में विश्वास नहीं रखता । उसने नैतिकता को उतार फेंका है। वह कर्महीन है भगवान ---- परमदुष्ट है । वह असत्य सम्भाषण करता है, विश्वास लेता है, आश्वासन देता है, दल तोड़ता है, यह आपकी तरह चक्र सुदर्शन धारी नही है प्रभु पर यह नोटधारी हैं। वोटधारी हैं, यह नोट और वोट से सत्ता में आता है, तमाम छली और षडयन्त्रकारी जन इसके मित्र हैं । 37. आज का स्वार्थी नेता लोकतन्त्र समाजवाद, साम्यवाद, का नारा लगाते हुए देश को बरबाद कर रहा है वे जातिवाद वर्गवाद, भाषावाद, और साम्प्रदायिकता को छिछली राजनीति में मोहरे के समान इस्तेमाल कर रहे हैं हमारे उस देश को नष्ट कररहे हैं जिसको हमारे देशभक्त वीरों ने स्वतन्त्रता सेनानियों ने अपने रक्त की बूँदों से सींचकर इस धरती पर स्वतन्त्रता, समता और न्याय के कमल खिलाये गयेथे। उसे आज हमारे नेताओं की क्षुद्र स्वार्थ भावना और सत्ता लिप्सा ने अपने पैरों तले रौंद डाला । 38.

परन्तु ऐसी बात नहीं है, कि समसामयिक लोग राजनैतिक अन्याय एवं भ्रष्टाचार से अनभिज्ञ है वह इन स्वार्थी लोलुप नेताओं से पूर्णतया परिचित है। परन्तु सत्ता व धन के आगे सभी विवश हैं। बुद्धिजीवी वर्ग सबकुछ जानते समझते हुए विवश है। और मौन है और निम्नवर्ग अनपढ़, गरीबी, के कारण निरीह हैं। परन्तु फिर भी राखमें दबी चिनगारी की भांति भ्रष्टराजनीति के प्रति विद्रोह की चेतना झलक जाती है। "जब तक तुम लोग अधिनायक तंत्र का विरोध नहीं करोगे, अपनी आवाज नहीं उठाओगे और बिना पेंदी के लोटों की सनसनी नारेबाजी में विश्वास करते रहोगे तब तक तुम लोगों का उद्धार नहीं निश्चित नहीं। 39

स्वार्थपूर्ण राजनैतिक नेतृत्व को "शुतुरमुर्ग के प्रतीक से व्यक्त करते हुए श्री ज्ञान देव अग्निहोत्री ने तंत्र को भ्रष्टाचार का पूरा और सही खाका खींचा है। सिंहासन खाली है, नाटक में समस्त राजनैतिक हथकण्डों को बनावृत किया गया है। "आज नहीं तो कल" नाटकमें नाटककार ने "पुरूष पात्र" के माध्यम से जनता के आक्रोशको अभिव्यक्त किया है। "हम साले बन्दरों की औलाद ——हमारीगर्दनें मदारियों की रस्सी में बंधी रहेंगी। वह डुगडुगी बजायेगा और हम नाचेंगे। ——यही हमारी नियति है। ——मदारी डमरू बजायेगा ——बदरियानाचेगी, ——मदारी छड़ी जमायेगा, ——बन्दर कलाबाजियाँ खायेगा यही हमारी नियति है। ——युवापीढ़ी इन स्वार्थी नेताओं की भ्रष्टराजनीति सेअत्यधिक असन्तुष्ट व आक्रोशित है। आपाधापी भाई भतीजावाद, के इस राजनैतिक युग में उनकी प्रतिभायें कुंठित हो रही है। बेरोजगारी के कारण शक्ति का दुरूपयोग हो रहा है। फलत: युवा पीढ़ी उत्तेजित हो चीख पड़ती है। युवक चीखकर लानत है ——लानत है, ——हमारा खून——हमाराशरीर हमारी जवानी क्या इसी लिए है। कि हम बूढ़े मरगिल्ले लेकिन चालाक भेड़ियों को अपने कन्धों पर ढोतेफिरेऔर वे हमारी गर्दनों में अपने नुकीले दांत धंसाये हमारा खून पीते रहे ? 41. युवापीढ़ी जमींदारीप्रथा से परिवर्तित रूप तथाकथित

---240

प्रजातंत्र के स्थान पर समाजवाद लाने को उद्यत है ।

"युवक (चीखकर) नहीं ....अब और नहीं बिल्कुल नहीं ....हम तुम्हें नहीं ढायेंगे । हमारे कन्धे अब तुम्हारीअर्थी पर ही लगेंगे । ---------लाल रंग आयेगा और जरूर आयेगा 42.

इन प्रमाणों से स्पष्ट हो जाता है, कि स्वतन्त्रता केपश्चात जब विविध क्षेत्रों में नवीन सम्भावनाओं केद्वार खुले जनता की तमाम मागे पूरी होने लगी, उनकी आशाओं आकांक्षाओं की पूर्ति केअवसर प्राप्त होने लगे, तो देश में नया वातावरण निर्मित होने लगा, सम्वैधानिक अधिकारों जमींदारी उन्मूलन देशकल्याण, की विभिन्न योजनाओं नारी शिक्षा, व समानता आदि विचारधाराओं ने नवजागरण के स्वर को गुंजित किया लेकिन इसके साथ-साथ राजनीति का स्वार्थान्ध युक्त घिनौना रूप भी उभर कर सामने आया है । जो जनता के अन्धविश्वासों जातिगत भाषावाद, क्षेत्रवाद, धार्मिकता, को राजनैतिक क्षेत्र में उठालकर देश की जड़ों को अन्दर ही अन्दर खोद रहा है । नाटककार इन समस्त विषमताओं कठिनताओं, केबीच से अपनी अनुभूति यात्रा तय करता हुआ अपने अनुभवों को नाटक मेंस्वर प्रदान करता हुआ जनता को जागृत कर रहा है । भ्रष्ट राजनीति के हथकण्डों का पर्दाफाश कर रहा है ।

6. औद्योगीकरण तथा वर्ग चेतना:-
==========================औद्योगीकरण आधुनिक अर्थव्यवस्था की धुरी है, "सभी राष्ट्र जिस देवता की उपासना करते हैं वह है औद्योगीकरण देवता ही यन्त्र हैं, और वहदेवता विशाल उत्पादन प्राकृतिक शक्तियाँ, और साधनों का अधिकतम् उपयोग है, इससे विकास शील देश अपने औद्योगिक ढांचे की कमियों को दूर करते हैं । और अल्प विकसित राष्ट्रों की निर्धनता असुरक्षा एवं पिछड़ेपन का समाधान इसी में निहित है । आज विश्व के समस्त राष्ट अपने साधनों का औद्योगिक विकास हेतु प्रवाहित कर रहे हैं ।

कृषि विकास के अभाव में औद्योगीक विकास नहीं हो सकता है। क्योंकि दोनों ही क्षेत्रों को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता । औद्योगीकरण और कृषि विकास का घनिष्ट सम्बन्ध है । सम सामयिक युग में विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के तहत कुटीर उद्योगों को भी पर्याप्त प्रश्रय मिला है । ~~फ़लत~~ गांवों की आर्थिक दशा में पर्याप्त सुधार हुआ है । साथही साथ शहरों व कस्बों में बड़े बड़े उद्योग धन्धों की स्थापना कर देश को आर्थिक रूप से उन्नत बनाने का प्रयास किया गया ।

आर्थिक स्थिति ही देश की सामाजिक तथा राजनैतिक व्यवस्था को प्रभाव शाली और सफल बनाती है । जब कभी आर्थिक सन्तुलन विभिन्न विषमताओं से जुड़ जाता है, तबसामाजिक संघर्ष तथा क्रान्ति का दौर आरम्भ होता है । अंग्रेजों के साथभारत आयी इस औद्योगिक क्रान्ति ने देश की कृषि प्रधान अर्थ व्यवस्था को सर्वाधिक प्रभावित किया है । यह सत्य है, कि औद्योगिक विकास ने देश की उन्नति मेंमहत्त्वपूर्ण योगदान दिया है । परन्तु यह भी सत्य है, कि इस प्रक्रिया ने विभिन्न असंगतियों, विद्रूपताओं तथा जटिलताओं की सृष्टि कीहै, कल-कारखानों ने अमीर और गरीब की ~~बढ़ बढ़~~ खायी को और अधिक चौड़ा किया है । पूंजीपति अधिकाधिक धनवान बनते गये और अमीरों की स्थिति दयनीय बनती गयी ।

शहरों में उद्योग धन्धों का विकास होने के कारण गांव के निर्धन किसान, खेतिहर, मजदूर, तथा अशिक्षित व शिक्षित युवक शहरों की ओर दौड़ने लगे । और शहरों में बढ़ती हुई आबादी ने आवास समस्या को जन्म दिया । और इस आवास समस्या के बढ़ जाने के कारण ये मजदूर फुटपाथों रेल के पुलों, पर रहनेको विवश हुए । इधर मिल मालिक अधिकाधिक लाभ कीलालच में मजदूरोंको उनके अधिकारों जैसे बोनस, चिकित्सा व आवास की सुविधा से वंचित करनेलगे। इस अधिकार बोध की भावना ने मालिक मजदूर

---242

केसंघर्ष को और भी अधिक तीव्र कर दिया है । आज शहरों में व्यक्ति वर्ण से नहीं, अपितु वर्ग से पहचाना जाता है । जो जितना धनी है उसे उतना ही अधिक जाति वर्ग का माना जाता है । इसप्रकार आधुनिक समाज में उच्च वर्ग ,मध्यमवर्ग, निम्न वर्ग में बंट गया है। और इसमें भी इसकी कई श्रेणियाँ जैसे अफसर वर्ग, बाबू वर्ग, चपरासी वर्ग, मजदूर वर्ग, श्रमिक वर्ग आदि वास्तव में आधुनिक आर्थिक व्यवस्था पृथा औद्योगिक विकास ने सामाजिक सन्दर्भों ने अन्य अनेक जटिलतायें व समस्याओं को उभारकर रखदिया है । आधुनिक व्यक्ति के सम्बन्ध पारिवारिक सामाजिक आधार पर नहीं, अपितुअर्थ के आधार पर बन बिगड़ रहे हैं । सामाजिक रीति रिवाज, रूढ़ियाँ, प्रथायें, धारणायें, भी इसके प्रभाव से अछूती नहींरह सकी हैं । और समकालीन हिन्दी साहित्य भी इसके प्रभाव से अछूता नहीं रह सका है।

५०१ समकालीन समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता, व वर्गसंघर्ष, का अनवरण करने वाले नाटकों में ---वाह रे इन्सान, घरौंदा, रात रानी, तेंदुआ, तीन दिन, तीन घर, तु-तू, आदि प्रमुख हैं । नाटक "रातरानी" में नाटककार ने मिल मालिक जयदेव व मजदूरों के बीच संघर्ष को चित्रित किया है । दूसरा व्यक्ति " ऐसे मालिक कोई क्याकहे9तीसरा व्यक्ति हम भूखे मरें,.......और ये प्रेस में ताला डालकर रंगरलिया करें ।

चौथा व्यक्ति:- "हमसे पूँछा तक नहीं हमारी मुसीबत क्या है9हमारी माँगों की तो बात ही दर किनारहै। 44.औद्योगीकरण से विकसित हो रही आर्थिक विषमता वर्ग संघर्ष को निरन्तर बढ़ावा दे रही है, समाज में ऐसे लोग लाखों की संख्या में भरे पड़े हैं, जिनको एक वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती । और घी दूध तो कल्पना की वस्तु बन गयी है । लेकिन इसी समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति हैं, जोकुत्ते बिल्लियों के जन्म दिन कोबड़ी धूम धाम से मनातेहैं। "तु-तू" नाटक में इसी आर्थिक विषमता को उदघाटित

करते हुए कहा है "---चाचा "तुम ठीक कहते हो जनता तो खुश है देशभर में अपने निकट रिश्तेदारों और फर्मा बरदारों के यहाँ इनवेटेशन कार्ड भेजदो कहो चाचा अपनी बिल्ली के जन्म दिन के शुभ अवसर पर एक काकटेल पार्टी दे रहे हैं। 45

वर्ग संघर्ष की इस विकट परिस्थिति में सबसे भयावह स्थिति मध्यमवर्ग की है, जो अपने झूठे दंभ और बाह्य दिखावे के कारण दोहरी जिन्दगी जी रहा है। सीमित साधनों में वह न तो उच्च वर्ग के समकक्ष पहुँच पाता है, और न ही सफेद पोश बना वह निम्न वर्ग में ही सम्मिलित हो पाता है। घरौंदा नाटक में अपनी विडम्बना पूर्ण स्थिति से त्रस्त छाया क्रोध व दुःख से कहती है "भाड़ में गये उनके संस्कार अबतो उनका संस्कार ही होना अच्छा है। हमने क्या पा लिया? किस काम के रहे हम? न इधर के न उधर के, सफेद कपड़े पहनने के बावजूद उस समाज के नियामकों को हम स्वीकार नहीं, मजदूरों से कम तनखवाह पाकर भी मजदूरकहलाने से नाकभौं सिकोड़ने वाले हम --- त्रिशंकु की सन्तान हैं --- त्रिशंकु की सन्तान हैं 46.

समकालीन युग का मजदूर मालिक द्वारा किये गये अत्याचारों को कर्मों का फल नहीं मानता वह निरन्तर अपने अधिकारों के लिए आवाज बलन्द कर रहा है। "दरिन्दे" नाटक में निम्न वर्ग के प्रतीक शेर भालू और लोमड़ी आदि जानवर समाज में सम्मान पूर्वक जीने का हक मांगते हुए कहते हैं, कि शेर तो मांग-पत्र तैयार करें, "शेर लोमड़ी की चौकी के इर्द गिर्द घूमता मांग-पत्र लिखाता है। लोमड़ी उसके पीछे पीछे चलती मांग-पत्र लिखने का मूक अभिनय करती है। जानवर और इन्सान को जीने का बराबर हक है। वे सारे काम बन्द किये जायें जिनसे जानवरों की सेहत और जिन्दगी पर बुरा असर पड़ता है। जंगल काटने बन्द किये जायें। हवा का दूषण रोका जाय। जानवरों के लिए अच्छे और सस्ते मकान बनाये जायें।

उन्हें पहनने के लिए कपड़े दिये जायें। भोजन की पर्याप्त व्यवस्था हो। समाजवाद का प्रसाद नेताओं की तरह जानवरों में भी किया जाय। जिससे उनका घर बने, वे फले फूलें और समाज मे उनकी इज्जत बढ़े। 47. "वाह रे इन्सान" नाटक में कान्ति अपने मजदूर भाईयों का प्रतिनिधि बन अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करता है। मैंने जिन्दगी में भूखों को बिलबिलाते हुए देखा है। लाचारों को लड़खड़ाते हुए देखा है। बेकसूर और बेसहारों को बरबाद होते हुए देखा है। और यह सब कुछ देखते हुए भी जब मैं कुछ नहीं कर सका तो मैंने एक अजम कर लिया था, प्रोफेसर कि मैं अपनी पूरी आवाज से चिल्लाऊँगा। दुनिया को झंझोड़ दूँगा। आगे बढ़ो, आगे बढ़ो और तोड़ डालो इन जुल्म की जंजीरों को इसी प्रकार भस्मासुर अभी जिन्दा है। नाटक में तेज बहादुर भ्रष्ट नेता लालमणि से कहता है, "मैं अपनी सीमा में ही हूँ, शोषण का विरोध करने का अधिकार सभी को है। शोषण किसी का भी नहीं होना चाहिए। वैयक्तिक चेतना से प्रभावित आज का निम्न वर्ग विशेष रूप से युवा व शिक्षित निम्नवर्ग स्वअस्तित्व बोध के आधार पर स्वाभिमान को पहचान चुका है। इसलिए वह अपने को किसी से तनिक भी छोटा या तुच्छ मानने को तैयार नहीं वह सबसे बराबरी का दर्जा चाहता है, राजा रानी नाटक में मिल मालिक जयदेव अपने अहम भाव के कारण मजदूरों से ढंग से बात नहीं करता, न ही उनकी माँगों पर उचित ध्यान देता है। तो मजदूर संगठित हो उनके घर का घेराव कर लेते हैं। उस समय मालिक मजदूर के बीच हुए निम्न संवाद कालीन मजदूर की वैयक्तिक चेतना पर प्रकाश डालते हैं।

आधुनिक युग का मजदूर अत्याचार को बर्दाश्त न करने की घोषणा कर चुका है। इसलिए वर्ग संघर्ष और भी तीव्र होता जा रहा है। मजदूर अपनी माँगों के समर्थन में घेराव, तालाबंदी, हड़ताल, लूटमार, आदि का सहारा लेते हैं। जिससे मालिक मजदूर के बीच की दीवार में एक और मोटी

तह लगा दी है। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि औद्योगीकरण ने यद्यपि देश के विकास तथा अर्थोपार्जन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। तथापि इस सत्य से आँखे नहीं मूँदी जा सकती। कि इसमें वर्ग विषमता को बढाया ही है, साथही मशीनों के आगमन ने श्रमिकों, मजदूरों के पेट पर लात मारी है। जैसे तैसे मजदूरी कर परिवार का भरण पोषण करने वाला मजदूर बेकार हो गया है, उधर शिक्षा का प्रचार बढ़ जाने से शिक्षित बेरोजगारों की संख्या भी बढती जा रही है। जिसने देश की विभिन्न समस्याओं, की कड़ी में एक और समस्या को विकट रूप में उभारा है। वह है बेरोजगारी की समस्या। औद्योगीकरण को लेकर रचे गये नाटकों में मानव परिवेश की विषाक्तता, सम्बन्धों के अर्थहीन एहसास, व्यक्ति विघटन एवं मोहभंग की पीड़ा प्रतिफलित की गयी है। इनमें कस्बे, नगर से लेकर महानगर, तक की जीवन्तता साकार हो उठी है विपिन कुमार अग्रवाल के लोटन नाटक में रोजाना की जिन्दगी मेंघटित नगरीय संत्रास के बीच घिरे आदमी की हालत और परेशानियों का जिक्र किया गया है। उसके चारों ओर भय और आशंका का साम्राज्य है। डा॰ लाल का कर्फ्यू और सन्तोष नारायण नौटियाल रचित "एक मशीन जवानी की" नाटक वर्तमान शहरी जीवन के बीच खण्डित रिश्तों की बेचैनी व्यक्ति के अलगाव, और दिशाहीनता, का प्रतिनिधित्व करते हैं। विकल्प नाटक में राम कुमार भ्रमर ने औद्योगिक विघटन की तस्वीर उभारी है। बलराज पन्डित का नाटक पाँचवा सवार आधुनिक समय बोध के निष्कर्ष पर मशीनी मूल्यों के बदलाव फैली सामाजिक अनास्था एवं इनसे सामंजस्य स्थापित न कर पाने वाली मानव प्रवृत्ति पर चोट करता है।

7. निर्धनता, मँहगाई व बेरोजगारी:-

द्वितीय विश्व युद्ध के दूषित भयंकर परिणामों के फलस्वरूप मँहगाई बढ़ने लगी, युद्धकाल में वस्तुओं के मूल्यों में

आशातीत वृद्धि होने के बाद वस्तुओं की क्रयशक्ति अनसामर्थ्य के बाहर चली गयी, अथक प्रयासों के बाद भी मौजीन सरकार निर्धनता, मंहगाई, व बेरोजगारी को रोक न सकी । वस्तुओं की पूर्ति मांग की अपेक्षा कम होने लगी, और मूल्यों में आशातीत वृद्धि होने लगी । 1962 और 1965 के चीन और पाक आक्रमणों के कारण मंहगाई और बेरोजगारी अपनी चरम सीमा पर पहुँच गयी जिससे युवापीढ़ी विक्षिप्त सी हो गयी । आज कल मंहगाई और बेरोजगारी ने विकराल रूप धारण कर लिया है । जिससे युवा पीढ़ी विक्षिप्त सी हो गयी है। इस विकराल मंहगाई को कमरतोड़ के नाम से भी अभिहित किया जा रहा है । इससे प्रभावित होकर सम-सामयिक नाट्यकारों ने अपनी नाट्यकृतियों में इस कमरतोड़ मंहगाई व बेरोजगारी को कथानक का विषय बनाया । जैसा देश की अन्तर्वाह्य परिस्थितियों ने समस्याओं को और अधिक विकट बना दिया । देश की आर्थिक सामाजिक, व राजनैतिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने की जो पंचवर्षीय योजनायें प्रारम्भ की गयी, उनसे भी अपेक्षित लाभ न मिल सका । जिसका परिणाम यह हुआ कि समाज में मंहगाई, बेकारी और निर्धनता निरन्तर बढ़ती रही, शिक्षित युवक आर्थिक रूप से टूटे हुए नौकरी की तलाश में दर-दर भटकने लगे, समाज में व्याप्त भाई भतीजावाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद स्वार्थपरकता और रिश्वत खोरी ने उनकी नैतिकता को धराशायी कर दिया। देश की राजनीति भी आज आदर्शविहीन व नैतिकता से च्युत होकर मानव मूल्यों को खोखला कर रही है । समकालीन समाज में व्याप्त अनेकानेक जटिलताओं, विसंगतियों तथा विद्रूपताओं से संघर्षरत व्यक्ति की टूटन, घुटन तथा जय पराजय का चित्रण आलोच्य कालीन नाटकों में भी यथातथ्य और मार्मिक चित्रण हुआ है । त्रिशंकु एक और अभिमन्यु आधे-अधूरे भूमि की ओर आदि अनेक नाटकों में हुआ है । आजकल बढ़ते हुए वैज्ञानिक बोध औद्योगिक विकास तथा शिक्षा के कारण व्यक्ति की सामाजिक नैतिक तथा धार्मिक मूल्यों के प्रति

स्थान कम होती जा रही है, यही कारण है कि आज का नाटक प्रतीक बनकर निम्न व उच्च वर्ग की कमजोरियों, बड़ी गहराई, उभारता है । अतः किम् एक और अजनबी देवयानी, का कहना है, कुत्ते, मिस्टर, अभिमन्यु वामाचार, दरिन्दे, उत्तर उर्वशी आदि नाटकों में भौतिकता के प्रति बढ़ते हुए आग्रह को उदघाटित किया गया है । "वाह रे इन्सान" का धन सेवक धन का सेवक बन अपनी अपनी पत्नी तक को दांव पर लगा देता है । धन के समक्ष उसे पत्नी की इज्जत मर्यादा और उसकी चीख पुकार फीकी लगती है । ऐसा अवसरवादी चापलूस व्यक्ति है । जो ईमानदारी नैतिकता तथा आदर्श को ऐसोआराम के समक्ष नगण्य मानता है ।

"मन की शान्ति" आत्मा का चैन, स्वर्गो तकसीन, क्या होता है, इन बातों से जीवन की खुशियाँ नहीं मिलती । जिन्दगी को ऐश और आराम नहीं मिलते । 49. उत्तर उर्वशी के मोना और उसका पति प्रकाशक धन के लाभ के लिए एक दूसरे को दांव पर लगाते हैं । प्रकाशक अपनी पत्नी मोना को इसी उद्देश्य के लिए लेखक के घर लेकर आता है। जिससे वह लेखक को फांसकर " कुछ रुपये बचा सके" 50. आधुनिक सुख सुविधाओं ने समकालीन व्यक्ति को इतना जकड लिया है, कि व्यक्ति अव्यवस्था के चुंगुल से निकलना चाहते हुए भी निकल नहीं पाता । मि. अभिमन्यु नाटक में नाटककार ने भौतिकता तथा आदर्श के बीच महाभारत चित्रित कर भौतिकता की जीत को उदघाटित किया है । राजन की पत्नी विमल अव्यवस्था से दुखी राजन् के कमीश्नरी से त्याग-पत्र देने पर कहती है " हमने प्रेम विवाह कियाहै, तुम मुझे अभाव में नहीं रख सके । तुम्हारे सारे दोस्त रिश्तेदार ऐसे हैं, जिनके बच्चे केवल कान्वेन्ट में पढ़ते हैं । जिनकी बड़ी बड़ी शादियाँ हुई है, 51. इसी प्रकार " अतः किम्" नाटक में वीरेन् तस्करी के धन्धे में पर्याप्त धन कमाकर अपनेईमानदार कर्तव्यनिष्ठ चचेरे भाई मनोहर को खरीदना चाहता है ।

और मजबूरियाँ और आर्थिक संकट में घिरा हुआ मनोहर कुंठित होकर कुछ सीमा तक बिकने को तैयार भी हो जाता है । 52.

इन नाटकों के अतिरिक्त घरौंदा, वामाचार, और एक और अभिमन्यु, रातरानी, भस्मासुर, अभी जिन्दा है, "पूर्ण विराम" कुत्ते, आदि अन्य नाटकों में भौतिकता के प्रति बढ़ते आकर्षण को चित्रित किया गया है ।

"भस्मासुर" अभी जिन्दा है । नाटक में छुटभैया नेता का प्रतीक भैदराम कहता है " अब राजनीति केवल पैसे वालों के लिए रह गयी है । आज समाजवाद पूँजी वाद के रथ पर बैठा है, जिसके पास पैसा है, वही चुनाव लड़ सकता है । और जीत भी पैसे वाले की ही होती है । आज तो वोट भी मांगने नहीं पडते खरीदने पड़ते हैं । 53.

इस प्रकार प्रतीक नाटकों में सामान्य जन जीवन की सफल अभिव्यक्ति हुई है । मंहगाई, बेरोजगारी, और आर्थिक विपन्नता से पिस रहा मध्यमवर्गीय समाज इन प्रतीक नाटकों में चर्चा का विषय बना हुआ है ।

सन्दर्भ सूची

सप्तम् परिच्छेद

1. भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद :- डा. राम विलास शर्मा पृष्ठ 260
2. वही - पृष्ठ 260-233
3. श्रीपत शर्मा:- हिन्दी नाटकों पर पाश्चात्य प्रभाव, पृष्ठ, 240
4. दशरथ ओझा:- स्वतन्त्र भारत, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार कृत न्याय की रात, चतुरसेन शास्त्री कृत पग ध्वनि, अश्क कृत अंधी गली आदि
5. चन्द्रगुप्त विद्यालंकार कृत न्याय की रात, विनोद रस्तोगी कृत आजादी के बाद, और नया हाथ ।
6. नरेश मेहता कृत सुबह के घंटे, खंडित यात्रा, मन्नू भण्डारी कृत बिना दीवारों का घर आदि
7. विश्वनाथ सिंह कृत घंटियां गूंजती है, तथा ज्ञानदेव अग्निहोत्री कृत नेफा की एक शाम
8. रमेश बक्षी:- देवयानी का कहना है पृष्ठ 26
9. सुरेश चन्द शुक्ल :- कुत्ते पृष्ठ 32
10. आज नहीं तो कल, सुशिल कुमार सिंह पृष्ठ 30
11. तू-तू, अस्थानन्द सदा सिंह पृष्ठ 55
12. द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास डा. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय पृष्ठ 19
13. कपास के फूल, जगदीश चतुर्वेदी पृष्ठ 58
14. राम की लड़ाई, डा. लाल पृष्ठ 32
15. वही पृष्ठ 43
16. वही पृष्ठ 19
17. वाह रे इन्सान:- रमेश मेहता पृष्ठ 101
18. शुतुरमुर्ग ज्ञानदेव अग्निहोत्री पृष्ठ 33
19. राम की लड़ाई:- डा. लाल पृष्ठ 30

20· भस्मासुर, डा· राम कुमार भ्रमर पृष्ठ 27

21· तू-तू, सदासिंह अस्थानन्द पृष्ठ 23

22· तू-तू, सदासिंह अस्थानन्द पृष्ठ 23

23· भस्मासुर, रामकुमार भ्रमर पृष्ठ 35

24· भस्मासुर, रामकुमार भ्रमर पृष्ठ 70

25· आज नहीं तो कल, सुशील कुमार सिंह पृष्ठ 18

27· 1· राम की लडाई, डा· लाल पृष्ठ 21

28· 2· भस्मासुर, राम कुमार भ्रमर पृष्ठ 25

29· 9· भस्मासुर, राम कुमार भ्रमर पृष्ठ 52

30· भस्मासुर अभी जिन्दा है डा· चन्द्र पृष्ठ 29

31· 2· अत: किम्, राधाकृष्ण सहाय पृष्ठ 71

32· 4· शील तीन दिन, तीन घर अंक-3 पृष्ठ 155

33· दरिन्दे, हमीदुल्ला पृष्ठ 21

34· वही " पृष्ठ 37

35· राम की लडाई, डा· लाल पृष्ठ 32

36· वही " " पृष्ठ 32

37· भस्मासुर राम कुमार भ्रमर पृष्ठ 20

38· एक और अभिमन्यु - रामगोपालगोयल पृष्ठ 31

39· सम्भवामि युगे-युगे, जि जे हरिजीत पृष्ठ 48

40· कल आज और कल, सुशील कुमार सिंह पृष्ठ 31

41· कल और आजकल सुशील कुमार सिंह पृष्ठ 32

42· वही " " पृष्ठ 40

43· शर्मा एवं सिंह : भारतीय अर्थशास्त्र पृष्ठ 5

44· रातरानी डा· लाल पृष्ठ पृष्ठ60

45· तू, तू, आर· सदासिंह पृष्ठ 52

46· दरिन्दें, हमीदुल्लाह पृष्ठ 23

47· 1· दरिन्दे : हमीदुल्लाह पृष्ठ 23

48.2. वाह रे इन्सान , रमेश मेहता पृष्ठ 22

49. वाह रे इन्सान, रमेश मेहता, पृष्ठ 20

50. उत्तर उर्वशी, हमीदुल्लाह पृष्ठ 17

51. मि. अभिमन्यु डा. लाल पृष्ठ 23

52. अत: किम् : राधाकृष्ण सहाय पृष्ठ 65-66

53. भस्मासुर अभी जिन्दा है, डा. चन्द्र पृष्ठ 17